नब्बे के दशक में आर्थिक प्रणाली में बदलाव की झलक एवं भारत में इसके प्रभाव

Rahul Deepak Minz
Assistant Professor (Guest Faculty), B.S. College, Lohardaga, Ranchi University.

Received: May 23, 2018 Accepted: July 17, 2018

भारत को आजादी 1947 में मिलने के बाद भारत देश को तय करना था, कि उसे अपनी आर्थिक गतिविधि के लिए इस प्रारूप को अपनाना है भारत ने उस समय दो आर्थिक प्रारूप, पूंजीवाद एवं समाजवाद में से समाजवाद का अनुसरण किया । क्योंकि आजादी से पूर्व भारत पर शासन एवं शोषण पूंजीवाद प्रकृति वाले देश ब्रिटेन द्वारा किया गया था, इस कारण भारत कभी भी उसे उस समय स्वीकार नहीं करता । अतः भारत ने उस समय समाजवाद का अनुसरण किया । समाजवाद का अनुसरण सोवियत संघ द्वारा भी किया जा रहा था । 1990 तक सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका दो ही महाशक्ति थी । 90 के शुरुआती दशक में समाजवादी प्रारूप के कमजोर होने क कारण सोवियत संघ का विघटन हो गया और बचा हुआ क्षेत्र रूस के नाम से जाना जाता है । क्योंकि भारत समाजवाद का अनुसरण करता था जिस कारण सोवियत संघ के विघटन का प्रत्यक्ष प्रभाव भारत पर भी पड़ा । तथा भारत को उस समय सहायता के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के पास जाना पड़ा । वास्तव में भारत ने IMF (International Monetary Fund) तथा W.B. (Word Bank) के पास मदद माँगी और इन दोनों संस्थाओं पर संयुक्त राज्य अमेरिका का बहुत अधिक प्रभाव रहा है।

90 के शुरुआती दशक में जब सोवियत संघ का विघटन हुआ तो उस समय भारत के फारेकस रिज़र्व में 110 Cr. U.S. $ बचे थे । तथा इस डॉलर से भारत अपने देश की जनता की 2 हफ्ते की जरूरत पूरा कर सकता था । अतः उसे IMF और WB जैसे संस्थान के पास ऋण के लिए जाना पड़ा । तथा IMF ने कुछ सुझावों के साथ भारत को ऋण प्रदान किया ताकि भारत उस समय उत्पन्न भुगतान असंतुलन संकट को दूर कर सके । उस समय IMF द्वारा भारत को आर्थिक प्रणाली में बदलाव कर उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण को अपनाने का सुझाव सशर्त दिया गया । उस समय केंद्र में पी.बी. नरसिम्हा राव की सरकार थी और वित्त मंत्री के रूप में डॉ० मनमोहन सिंह थे । भारत ने उस समय अचानक किए जाने वाले परिवर्तन को नहीं माना तथा उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण धीरे–धीरे अपनाए जाने की बात कही ।

आर्थिक रुप में धीरे–धीरे परिवर्तन का असर जल्द ही भारत में दिखने लगा तथा लोगों की उम्मीद सरकार से बढ़ने लगी। अथार्त अब लोग बहुत सी सुविधाओं की मांग करने लगे, जिसका बखूबी अंदाज विदेशी कंपनियों ने लगा लिया था । मल्टी नेशनल कंपनियों ने भारत को एक बड़े बाजार के रूप में देखा और इसका फायदा बड़ी कंपनियों के साथ–साथ भारत के लोगों को भी मिला।

90 के दशक में शुरुआत के समय ही तकनीक के क्षेत्र में नये नए शोध होने का लाभ कंपनियों को मिला । उस समय तक भारत में सैटेलाइट टेलीविजन ने कदम रख लिया था । अब बस कंपनियों को इस सैटेलाइट टेलीविजन के माध्यम से लोगों से जुड़ना था । उस समय भारत खेल जगत में एक नए सितारे को उभरते हुए देख रहा था । खेल जगत क्रिकेट के भगवान माने जाने वाले सचिन तेंदुलकर पर्दापण कर रहे थे और लोग उन्हें बहुत अधिक पसंद करने लगे थे । सैटेलाइट टेलीविजन से रातों–रात सचिन को एक सुपरस्टार बना दिया लाभ कई बड़ी कंपनियों के प्रचार के माध्यम से अपने मुनाफे में वृद्धि किया । इसी बीच 90 का दशक लोगों के मतभेद का भी गवाह बना मतभेद की शुरुआत केंद्र कश्मीर रहा जिसका असर धीरे–धीरे पूरे भारत में हो गया । कश्मीर में कुछ राजनैतिक कारणों के अलगाववादी की शुरुआत बहुत पहले, आजादी के बाद से ही हो चुकी थी । अलगाववादी विचारधारा ने आतंकवाद को जन्म दिया । परिणाम स्वरुप धर्म को लेकर लड़ाइयां शुरू होने लगी, लड़ाइयां दंगे का रूप लेने लगी । इसी बीच लंबे समय के शासन में रहे कांग्रेस पार्टी के विरुद्ध भारतीय जनता पार्टी उभर कर आई। इसने धार्मिक मुद्दों को लेकर बहुत जल्दी ही अपनी साख पूरे भारत में बना ली। इसी समय चुनाव आने वाले थे इस कारण भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव को ध्यान में रख कर एक रैली पूरे भारत में निकाला जिसे पूरे देश के लोगों को जोड़ कर अयोध्या तक पहुंचाना था । भीड़ तो अयोध्या पहुंच गई किंतु किन्ही कारणों से भीड़ बेकाबू हो गई तथा वह प्रशासन की नियंत्रण से बाहर हो गई । भीड़ द्वारा अयोध्या में बाबरी मस्जिद को दिसंबर 1992 को गिरा दिया गया वहां से भारत में सांप्रदायिकता का नया युग शुरू हो गया । कई दंगे–फसाद इस हादसे के बाद और हुए । मुंबई में 1993 का बम ब्लास्ट कांड कहीं ना कहीं इसका प्रभाव था । भारत अभी आर्थिक स्थिति सुधार आ ही पा रहा था कि इस तरह की घटना बार–बार होने से इसके आर्थिक गति में धीमापन आ गया । इस तरह की घटनाओं से व्यापर एवं निवेश में कमी आती है किंतु भारत एक ऐसा अद्भुत देश है जो इस प्रकार की घटनाओं के बाद भी आगे बढ़ता रहा । इसी समय कॉस्मेटिक इंडस्ट्री ने भारत में अपना बाजार फैलाया और 1994 में दो विदेशी ख़िताब मिस वर्ल्ड और मिस इंडिया भारत को मिला । कहीं न कहीं ये ख़िताब महिला सशक्तिकरण का दिखालाने लगा जो कि देश के बाजार के लिए हितकारी हुआ । महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले साधनों की मांग में वृद्धि हुई ।

90 के दशक में भारत ने पहले से चले आ रहे नेहरूयिन सोशलिस्ट मॉडल को छोड़कर उदारीकरण, निजीकरण वैश्वीकरण को अपनाया इसका लाभ भारत में मांग के बढ़ने के रूप में हुई । अथार्त जब भी कोई देश में मुद्रा का चक्रीय प्रवाह तेज गति से होगा उस देश में आर्थिक विकास तेजी से बढ़ेगा । क्योंकि मुद्रा के चक्रीय प्रवाह के कारण लोगों के बीच में आपसी लेनदेन में वृद्धि होगी । यही बड़ी हुई लेनदेन दश में समग्र मांग को बढ़ाता है। किसी भी अर्थव्यवस्था में मांग में वृद्धि,पूर्ति के साथ साथ बढ़ती है तो यह

अच्छा माना जाता है मांग में वृद्धि होने के साथ–साथ उस मांग को पूरा करने के लिए देश में संसाधन उपलब्ध है तो उस देश में आर्थिक विकास को प्रगति मिलती ह ।

इस प्रकार हम देख रहे हैं कि किस प्रकार 90 के दशक में भारत में अनेक कठिन समय का सामना करते हुए कई उतार–चढ़ाव को देखा और अनेकता में एकता की पहचान देते हुए आज विकास की इस अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया कि आज विश्व के विकसित देश भारत से व्यापार करने क लिए उत्सुक रहते हैं क्योंकि अब भारत एक उभरता हुआ बाजार के रूप में पूरे विश्व में उभरा है यही स्थिति भारत को और आगे ले जाएगी तथा इसका श्रेय निश्चित रूप से 90 के दशक में आर्थिक सुधार को जाता है।

संदर्भ सूचि :–

1. Economic Survey 1991-92
2. India's Economic reforms, 1991-2001 by Vijay Joshi
3. New Industrial policy, 1991
4. Indian Economy by Ramesh Singh